'से' का बाजार नियम तथा रोजगार का क्लासिकल सिद्धान्त
(Say's Law of Market & Classical Theory of Employment)

◆परिचय (Introduction)

- आधुनिक समष्टि अर्थशास्त्र में रोजगार के वैज्ञानिक विश्लेषण का श्रेय ***जॉन मेनार्ड कीन्स (John Maynard Keynes)*** को जाता है।
- **1936** में उनकी प्रसिद्ध पुस्तक ***"General Theory of Employment, Interest and Money"*** प्रकाशित हुई।

इससे पहले **क्लासिकल अर्थशास्त्रियों** का मानना था कि:

- अर्थव्यवस्था में ***हमेशा पूर्ण रोजगार (Full Employment)*** की स्थिति रहती है।
- बेरोजगारी केवल ***अस्थायी (Temporary)*** होती है।

- ***कीन्स*** ने इस विचार का खंडन किया और बताया कि:
  - अर्थव्यवस्था में ***दीर्घकालीन बेरोजगारी*** **भी संभव है**।
  - *समष्टि मांग (Aggregate Demand) की कमी* बेरोजगारी का कारण है।

◆ रोजगार का अर्थ (Meaning of Employment)

- जब कोई व्यक्ति किसी ***उत्पादक कार्य (Productive Work)*** में लगा होता है, तो उसे रोजगार कहा जाता है।

केवल काम में लगे रहना पर्याप्त नहीं है—

कार्य से ***राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि*** होनी चाहिए।

यदि व्यक्ति काम कर रहा है लेकिन उत्पादन में वृद्धि नहीं हो रही → ***बेरोजगार माना जाएगा।***

◆ पूर्ण रोजगार का अर्थ (Meaning of Full Employment)

- पूर्ण रोजगार का अर्थ:

हर योग्य व्यक्ति को प्रचलित मजदूरी दर पर काम मिल जाए।

महत्वपूर्ण बिंदु:

- पूर्ण रोजगार का अर्थ **शून्य बेरोजगारी नहीं** है।

- कुछ बेरोजगारी हमेशा रहती है जैसे:
  - घर्षणात्मक (Frictional)
  - मौसमी (Seasonal)

अतः पूर्ण रोजगार = **अल्प बेरोजगारी के साथ संतुलित स्थिति**

◆ पूर्ण रोजगार की क्लासिकल अवधारणा *(Classical Concept of Full Employment)*

क्लासिकल अर्थशास्त्रियों के मुख्य विचार:

1. **Say's Law लागू होता है**
   - ☞ "Supply creates its own demand"
   - → उत्पादन स्वयं अपनी मांग पैदा करता है
2. **पूर्ण रोजगार सामान्य स्थिति है**
   - अर्थव्यवस्था स्वचालित रूप से संतुलन प्राप्त कर लेती है
3. **बेरोजगारी अस्थायी है**
   - मजदूरी लचीली (Flexible) होती है
   - मजदूरी घटने से रोजगार बढ़ जाता है
4. **सरकार का हस्तक्षेप आवश्यक नहीं**
   - मुक्त बाजार (Free Market) ही संतुलन स्थापित करता है
5. **बेरोजगारी के कारण:**
   - न्यूनतम मजदूरी कानून
   - ट्रेड यूनियन
   - बाजार में हस्तक्षेप

◆ कीन्सियन एवं आधुनिक अवधारणा *(Keynesian & Modern Concept of Full Employment)*

कीन्स के अनुसार:

1. **पूर्ण रोजगार =**
   - ☞ **अनैच्छिक बेरोजगारी (Involuntary Unemployment) का अभाव**

2. **मुख्य कारण बेरोजगारी का:**
   - **समष्टि मांग (Aggregate Demand) की कमी**

3. **मजदूरी में कमी से रोजगार नहीं बढ़ता हमेशा**
   - क्योंकि मांग भी घट सकती है

4. **पूर्ण रोजगार की स्थिति:**
   - जब सभी इच्छुक व्यक्तियों को काम मिल जाए
   - और उत्पादन क्षमता का पूरा उपयोग हो

◆ लॉर्ड बेवरेज का दृष्टिकोण

"पूर्ण रोजगार वह स्थिति है जहाँ—

☞ नौकरी खोजने वालों को नौकरी जल्दी मिल जाती है।"

◆ अन्य आधुनिक विचार

पूर्ण रोजगार का अर्थ:

- कार्य करने योग्य प्रत्येक व्यक्ति को काम मिले
- उत्पादन संसाधनों का पूर्ण उपयोग हो
- कुछ बेरोजगारी (जैसे frictional) स्वीकार्य है

रोजगार का क्लासिकल सिद्धान्त *(Classical Theory of Employment)*

◆ क्लासिकल सिद्धान्त का सार

यह सिद्धान्त इस धारणा पर आधारित है कि:

मुक्त अर्थव्यवस्था (Free Economy) में कोई सरकारी हस्तक्षेप नहीं होता

परिणाम:

- सभी उत्पादन साधनों का **पूर्ण उपयोग होता है**
- अर्थव्यवस्था में **पूर्ण रोजगार सामान्य स्थिति** होती है

◆ क्लासिकल विचारधारा के मुख्य बिंदु

1. **पूर्ण रोजगार सामान्य अवस्था है**

2. **बेरोजगारी:**

केवल **अल्पकालिक (Temporary)** होती है

3. **अर्थव्यवस्था में:**

स्वतः संतुलन (Self-adjustment) की शक्ति होती है

4. **तीनों बाजार संतुलित रहते हैं:**

- वस्तु बाजार (Product Market)
- पूंजी बाजार (Capital Market)
- श्रम बाजार (Labour Market)

◆ क्लासिकल सिद्धान्त के मुख्य आधार

क्लासिकल सिद्धान्त निम्न तीन सिद्धांतों पर आधारित है:

1. **से का बाजार नियम (Say's Law of Market)**
2. **क्लासिकल ब्याज सिद्धान्त (Rate of Interest Theory)**
3. **श्रम की मांग एवं पूर्ति का सिद्धान्त**

◆ क्लासिकल सिद्धान्त की मान्यताएँ (Assumptions)

1. अर्थव्यवस्था **बंद (Closed Economy)** है
2. **सरकारी हस्तक्षेप नहीं होता**
3. सभी बाजारों में **पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition)**
4. मजदूरी, ब्याज दर, कीमतें **पूरी तरह लचीली (Flexible)**
5. बचत केवल **व्यक्तियों द्वारा की जाती है**
6. **मुद्रा भ्रम (Money Illusion) नहीं होता**
7. तकनीक स्थिर रहती है
8. सभी व्यक्ति **तार्किक (Rational)** होते हैं

से का बाजार नियम *(Say's Law of Market)*

- **प्रतिपादक: जे. बी. से (Jean Baptiste Say)**
- **मुख्य कथन:**

☞ **"Supply creates its own demand"**
(पूर्ति स्वयं अपनी मांग उत्पन्न करती है)

◆ नियम का अर्थ

जब वस्तुओं का उत्पादन होता है:

- तो उसी समय आय (Income) उत्पन्न होती है
- यह आय वस्तुओं की मांग पैदा करती है

☞ इसलिए:

अतिउत्पादन (Overproduction) संभव नहीं है

◈ प्रमुख परिभाषा (Standard Definition)

☞ **"Supply creates its own demand."**

अर्थात् **प्रत्येक उत्पादन अपने बराबर की मांग स्वयं उत्पन्न करता है।**

☞ "जब भी वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन किया जाता है, तो उसके साथ ही उतनी ही आय उत्पन्न होती है, जो उन वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग को जन्म देती है।"

◈ J.B. Say के अनुसार

☞ "उत्पादन ही वस्तुओं के लिए बाजार का निर्माण करता है।"

(Production creates market for goods)

◈ Exam Writing Point (Perfect Line)

☞ "से के अनुसार, अर्थव्यवस्था में सामान्य मांग की कमी नहीं हो सकती क्योंकि प्रत्येक पूर्ति अपनी मांग स्वयं उत्पन्न करती है।"

☞ **Supply = Demand (Automatically)**

◆ वस्तु-विनिमय अर्थव्यवस्था में नियम

Barter economy में:

- वस्तु के बदले वस्तु का विनिमय होता है
- **उत्पादक उत्पादन करता है:**
  - ➢ अपनी आवश्यकताओं के लिए
  - ➢ अन्य वस्तुएँ प्राप्त करने के लिए

☞ इसलिए:

अतिरिक्त उत्पादन संभव नहीं

◆ मुद्रा अर्थव्यवस्था में नियम

धन केवल **माध्यम (Medium)** है, बाधा नहीं

उत्पादन के दौरान:

1. आय उत्पन्न होती है
2. वही आय वस्तुओं की मांग बनती है

☞ निष्कर्ष:

हर उत्पादन अपनी मांग खुद पैदा करता है

◆बचत और विनियोग (Saving = Investment)

क्लासिकल सिद्धान्त के अनुसार: **बचत (S) = विनियोग (I)**

✓ कैसे संतुलन होता है?

- यदि बचत > विनियोग →
  ब्याज दर ↓ → निवेश ↑

- यदि निवेश > बचत →
  ब्याज दर ↑ → बचत ↑

☞ अंततः:
S = I पर संतुलन स्थापित होता है

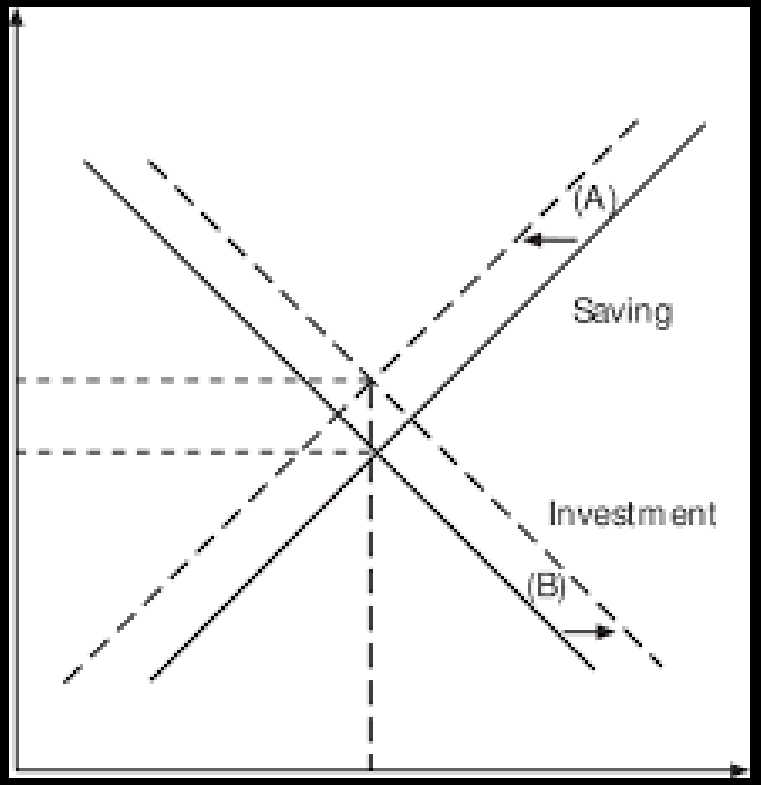

◆ से के नियम के निष्कर्ष

1. अर्थव्यवस्था में **स्वतः समायोजन (Self-adjustment)** होता है
2. सामान्य मांग की कमी नहीं होती
3. **पूर्ण रोजगार बना रहता है**
4. बचत = निवेश
5. सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं

से का बाजार नियम – श्रम मांग एवं श्रम पूर्ति विश्लेषण

◆ 1. मूल विचार (PIGOU का दृष्टिकोण)

- श्रम बाजार में **पूर्ण प्रतियोगिता** होती है
- मजदूरी दर (Wage rate) **flexible (लचीली)** होती है
- यदि मजदूरी कम हो → रोजगार बढ़ेगा

: बेरोजगारी का कारण = **उच्च मजदूरी (High wage)**

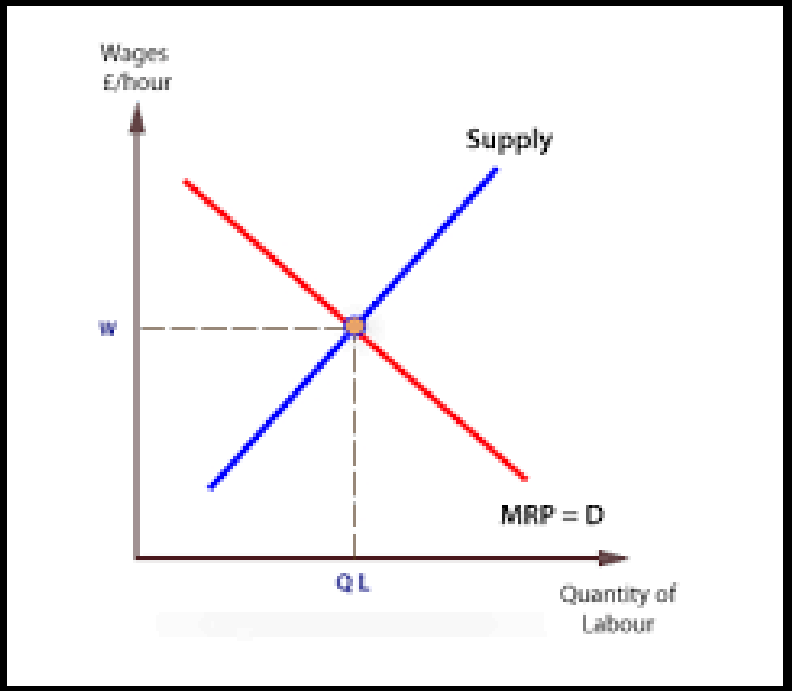

◆ 2. Pigou का सूत्र

$$N = \frac{q.Y}{w}$$

जहाँ:

N = रोजगार (Employment); Y = राष्ट्रीय आय

q = मजदूरी का हिस्सा; W = मजदूरी दर

◆ श्रम मांग (Labour Demand – DD Curve)

- **नकारात्मक ढाल (Downward slope)**
- मजदूरी बढ़े → श्रम की मांग घटे

☞ Example:
Factory मालिक ज्यादा मजदूरी देगा तो कम workers रखेगा

◆ श्रम पूर्ति (Labour Supply – SS Curve)

- **सकारात्मक ढाल (Upward slope)**
- मजदूरी बढ़े → लोग ज्यादा काम करना चाहेंगे

प्रतिष्ठित (Classical) सिद्धांत के निष्कर्ष / मान्यताएँ

1. अर्थव्यवस्था में **पूर्ण रोजगार सामान्य स्थिति** है
2. **स्वयं समायोजन (Self-adjustment)** होता है
3. मांग की कमी संभव नहीं (Say's Law)
4. बचत = निवेश (Interest rate adjust करता है)
5. मजदूरी लचीली होती है
6. सरकार की जरूरत नहीं (Laissez-faire)
7. बेरोजगारी = अस्थायी (Temporary)

📓 प्रतिष्ठित सिद्धांत की आलोचना (Keynes Criticism)

▼ 1. पूर्ण रोजगार सामान्य नहीं

☞ Keynes: वास्तविक दुनिया में **Underemployment common है**

▼ 2. Supply demand create नहीं करती

☞ Say's Law गलत क्योंकि, लोग **saving करते हैं** - Demand कम हो सकती है

▼ 3. बचत ≠ निवेश (Automatically नहीं)

- Classical: Interest rate balance करता है
- Keynes: Income level ज्यादा important

▼ 4. सरकारी हस्तक्षेप जरूरी

☞ Classical: No govt role

☞ Keynes: Govt spending जरूरी

▼ 5. मजदूरी घटाने से रोजगार नहीं बढ़ता

☞ क्यों?

- मजदूरी ↓ → income ↓
- income ↓ → demand ↓
- demand ↓ → production ↓
- ☞ रोजगार घट सकता है

6. Speculative demand ignore किया

- Classical: सिर्फ transaction + precaution
- Keynes: **speculation भी important**

▼ 7. Money neutral नहीं होती

- Classical: Money neutral
- Keynes: Money → real output affect करती है

▼ 8. Underemployment equilibrium

☞ Keynes का सबसे important point:

- Economy **low employment पर भी stable रह सकती है**